The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में शिक्षाविद् कृष्ण कुमार के विचार

प्रो0 शिवम श्रीवास्तव
शिक्षाशास्त्र विभाग
किसान पी0जी0 कालेज, बहराइच।

विवेक श्रीवास्तव
शोधार्थी
किसान पी0जी0 कालेज, बहराइच।

सारांश

मशहूर शिक्षविद कृष्ण कुमार का जन्म 1951 में प्रयागराज (इलाहाबाद) उत्तर प्रदेश में हुआ, आप दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा के प्रोफेसर और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के निदेशक रहे है। लन्दन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन ने डी0 लिट की उपाधि प्रदान की है। 2011 में आपको पदम् श्री से सम्मानित किया गया। शिक्षा सम्बन्धी लेखन के अलावा वे कहनियां निबंध और संस्मरण भी लिखते है।

प्रो0 कृष्ण कुमार ने अपने शोधपरक लेखन में महिलाओं की सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में गहनता से अध्ययन किया है। आपने स्त्रियों एवं पुरूषों के जीवन में व्याप्त विषमताओं पर अपने लेखन के माध्यम से आम लोगो को सोचने के लिए विवश कर दिया। वे विषमताएं चाहे घरेलू परिवेश की हों। विद्यालयी दिनचर्या की हो या सामाजिक जीवन की हों।

शब्द संकेत – महिला, सामाजिक, संरचना, समाज ।

महिलाओं की सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में प्रो0 कृष्ण कुमार के विचार उनकी रचनात्मकता सृजनशीलता एवं शोधपरक दृष्टि का परिणाम है और नारी के सामाजिक सम्बन्ध एवं उनकी समाजीकरण की प्रक्रिया के कई अनदेखे एवं अनसुने पक्षों को हमारे समक्ष उजागर करने का एक प्रयास है। उन्होने बहुत सरलता, सहजता एवं सतर्कता से भारतीय नारी के सामाजिक, सास्कृतिक और नैतिक व्यवस्था को समझने एवं समझाने

का कार्य किया है। उनका लेखन भारतीय, सांस्कृतिक मान्यताओं, परम्पराओं मिथकों एवं प्रतीकों के चक्रव्यूह में उलझी मानवाधिकार से वंचित नारी को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने को तैयार करने का एक प्रयास है।

समाज अपने सदस्यों को समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा आत्मसात कराता है जिसके अन्तर्गत प्रारम्भ से ही बच्चों को समाज में उठने–बैठने, बोलने और व्यवहार करने के तरीकों से परिचित कराने का प्रयास किया जाता है। समाजीकरण का तात्पर्य बालकों एवं बालिकाओं के सम्बन्ध में अलग–अलग है। इसके अन्तर्गत बालकों को तो अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पूरी स्वतंत्रता रहती है परन्तु जब बात बालिकाओं की हो तो उनके लिए सामाजिक समाजीकरण का मतलब है समाज द्वारा अपनी पूर्व मान्यताओं, सांस्कृतिक परम्पराओं एवं मिथकों के आधार पर पूर्व निर्मित, बने–बनाये खांचे में ढल जाने से है। पूर्व निर्मित खांचे में ढालने की इस प्रक्रिया में बालिका का अपने मस्तिक एवं तर्कबुद्धि का प्रयोग, पूर्णतः वर्जित है। यदि कोई बालिका गलती से अपनी तर्क बुद्धि का प्रयोग करते हुए इस बने बनाए ढांचे पर प्रश्न उठाती है तो उसे सामाजिक उथल–पुथल और अशांति का कारण मान लिया जाता है।

प्रो0 कृष्ण कुमार जी ने बालिकाओं के सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार नामक संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट की है। परिवार एवं समाज द्वारा स्थापित पूर्व मान्यताओं सांस्कृतिक प्रतीकों एवं मिथकों के आधार पर बने ढांचे में एक बालिका से प्रौढ़ स्त्री बनने की प्रक्रिया के दौरान उसकी भूमिका निर्धारित की जाती है। परिवार एक स्त्री के उठने–बैठने, बोलने, सड़क पर चलने, स्कूल एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर उनका व्यवहार एवं भूमिका पहले ही स्पष्ट कर चुकी होती है और स्त्री को उसी के अनुसार कार्य करना होता है। जो स्त्री समाज द्वारा निर्धारित पूर्व मान्यताओं के जितना निकट होती है उसे समाज में उतने ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है इसके उलट व्यवहार करने वाली स्त्री को समाज शंका की दृष्टि से देखता है।

अब प्रश्न ये उठता है कि ये सामाजिक पूर्व मान्यताएं क्या है और एक बालक एवं बालिका के व्यक्तित्व को ये किस प्रकार प्रभावित करती है। जीव वैज्ञाजिक दृष्टि से देखे तो सोना–जागना दैहिक क्रियाएं हैं परन्तु मनुष्य इन क्रियाओं को सामाजिक संदर्भ में क्रियान्वित करता है। एक बालिका के लिए प्रातः मां के साथ जल्दी उठकर घर के दैनिक कार्यो में मां का हाथ–बटाना अच्छा माना जाता है जबकि बालकों

के लिए ऐसी कोई बाध्यता नही है। इसी प्रकार रात में सोने का भी समाज बालक एवं बालिका के लिए अलग–अलग भूमिका निर्धारित करता है लड़कियों के लिए रात को बिस्तर जाने से पहले घर के सारे कार्य समाप्त करना होता है जबकि बालकों के लिए ऐसी कोई बाध्यता नहीं है।

सड़क का उपयोग एवं महत्व भी लड़का एवं लड़की के लिए अलग–अलग है। लड़का जब घर से बाहर सड़क पर निकलता है तो सड़क उसके लिए एक खुली जगह जहां वह घर के बन्द वातावरण से उठकर निरउद्देश्य घूमने के लिए आ सकता है, सड़क पर लड़का कहीं भी खड़ा हो सकता है, किसी से भी बात कर सकता है, किसी भी दुकान के सामने खड़े होकर नजारा देख सकता है। इसके विपरीत एक लड़की के लिए सड़क एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का एक साधन है। लड़की के लिए सड़क ऐसी जगह नही है जिसका उपयोग एवं अर्थ लड़के की तरह खुद तय कर सके। एक लड़की के लिए सड़क एक असुरक्षित जगह होती है जहाँ से वह जितना जल्दी हो सके अपने गन्तव्य तक पहुंचने का प्रयास करती है क्योंकि यदि सड़क पर लड़की के साथ कोई समस्या खड़ी हो जाए जो समाज के तथाकथित बुद्धजीवी लड़की के कार्य–व्यवहार उसके पहनावे पर उंगली उठाने लगते हैं और समस्या के लिए लड़की को ही जिम्मेदार बताने लगते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि चाहे सड़क हो, बाजार हो, घर हो या अन्य कोई सार्वजनिक स्थान हो लड़की के संदर्भ में जो उपयोग एवं भूमिका समाज ने पूर्व निर्धारित कर दिया है उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेना समाज द्वारा प्रशंसनीय माना जाता है।

कृष्ण कुमार जी ने लड़के और लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था स्कूल और छात्रावास के जीवन का बड़ी गहनता से अध्ययन और चिन्तन किया है। हम उनके विचारों मे पाते हैं की लड़के और लड़कियों की बुनियादी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक केवल पाठ्यक्रम मे ही विषमता नहीं है बल्कि बुनियादी शिल्पगत फर्क भी प्रायः देखने को मिलता है। लड़कियों के स्कूल में अगर शिल्पगत विषमता की बात की जाए तो खेल मैदान बीच में होते हैं जिन्हें इमारत चारो तरफ से घेरे हुए होती है। चहरदीवारियाँ देखने से किलेनुमा या आज की संरचना से कहा जाए तो जेल जैसी दिखाई देती है। स्कूल मे एक ही फाटक होता है। जिससे आना–जाना संभव होता है। जो यह अहसास दिलाता है कि इन किलानुमा व्यवस्था में अथवा प्रबंधन में लड़कियों के स्कूली जीवन का सुरक्षित बनाया हुआ है। वही दूसरी तरफ इसका एक पहलू यही भी है कि

असुरक्षा के डर से शायद यह प्रबंध किए गए हैं। स्कूल समाज का लघु रूप होता है और इस लघु रूप की बेड़ियों से जकड़ी यह व्यवस्था कब तक अनवरत् चलती रहेगी और छात्राओं के स्कूली जीवन को दिशा देगी। प्रो0 कृष्ण कुमार इस व्यवस्था को भी लड़कियों के मन में भय और कुंठा के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

स्कूल की दिनचार्या का स्थान भी एक रोचक विषय है जिसे करीब से देखने पर हम लड़के –लड़कियों के सामाजिक अनुभवों और शैक्षिक व्यवस्थाओं तथा संस्कारों के अन्तर को समझ सकते हैं सुबह स्कूल के दरवाजे तक पहुंचने के पूर्व के अनुभव लड़के और लड़कियों मे भिन्न–भिन्न होते हैं। एक लड़के की नींद टूटने के बाद जहां उसके पास पर्याप्त समय होता है स्कूल जाने की तैयारी करने और मन मस्तिक को विद्यालय के अनुकूल बनाने की वही जब एक लड़की की नींद खुलती है तो उसके सामने घरेलू और पारिवारिक जिम्मेदारियों का वह पहाड़ खड़ा होता है जिन्हें लांघकर समय से स्कूल पहुँचना होता है। कभी–कभी स्थिति यह होती है की घरेलू कामकाज निपटाते–निपटाते बिना खाये पिये विद्यालय जाना पड़ता है। समय ही नही होता की वह अपने मनोमस्तिष्क का शिक्षा के लिए विद्यालय वातावरण के अनुरूप तैयार कर सके जिसका प्रभाव कभी–कभी नकारात्मक रूप में शिक्षा और स्वभाव पर देखने को मिलता है। स्त्री का जीवन दैनिक जीवन के उस खींचतान में शामिल हो जाता है जिसे जीवन का पर्याय कहना उचित होगा या अनुचित इसका निर्णय भी दुविधा मे डालता है।

भारतीय समाज में लड़के और लड़कियों की सामाजिक स्थति, घरेलू वातावरण और शिक्षागत व्यवस्थाओं में उपरोक्त विषमताओं के अलावा भी अनेक ऐसी विषमताएं हैं जो लड़कियों की सामाजिक स्थिति को आज भी इतना प्रभावित करती है कि उनके जीवन पर मैथली शरण गुप्त द्वारा लिखित **पंक्ति–अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में है दूध और आंखो मे पानी**–की याद दिलाती है। प्रो0 कृष्ण कुमार इन सभी विषमताओं और परिस्थितियों को चिन्हित कर इन पर चिंतन और यर्थाथ संसाधन की बात करते है और कहते हैं कि इसका समाधान माप सत्ता में निहित नही है इसके लिए समाज शिक्षा व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था को संचालकों और सामाजिक संगठनों तथा समाज के प्रगतिशील बुद्धिजीवी और विचारकों को आगे आना होगा। तभी इन विषमताओं, विसंगतियों रूढ़ियों का समाधान हो सकेगा जो नारी जीवन को नई दिशा प्रदान करेगा।

संदर्भ सूची –

1. कुमार कृष्ण (2011), विचार का डर, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

2. कुमार कृष्ण (2012), राज समाज और शिक्षा राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. कुमार कृष्ण (2022), चूड़ी बाजार मे लड़की, राज कमल, प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. https://www.inspirajournals.com

.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number October-2023/13
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रो0 शिवम श्रीवास्तव और विवेक श्रीवास्तव

for publication of research paper title

"भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में शिक्षाविद् कृष्ण कुमार के विचार"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-03, Month October, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY